

२. बूढ़ी काकी

प्रस्तावना

* प्रेमचन्द का जन्म सन 1880 में उत्तर प्रदेश में वाराणसी के नजदीक लमही नाम के गाँव में हुआ था। उनका मूलनाम धनपतराय था। शिक्षा काल में ही उन्होंने अंग्रेजी के साथ उर्दू का भी अध्ययन किया था। प्रारंभ में वे कुछ वर्षों तक स्कूल में रहे, बाद में शिक्षा विभाग में सब-डिप्टी इंस्पेक्टर रहे। स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्होंने नौकरी छोड़ दी और वे स्वतंत्र लेखन की ओर मुड़े। वे हिंदी ही नहीं बल्कि समग्र भारतीय साहित्य के महान व्यक्तित्व हैं।

अपनी आवाज जनता तक पहुँचाने के लिए उन्होंने उपन्यास, कहानियाँ और नाटक लिखे। उन्होंने अन्य भाषाओं से अनुवाद किए, निबंध लिखे तथा बालपयोगी साहित्य की रचना भी की। गबन, वरदान, प्रतिज्ञा, सेवा सदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि, निर्मला, कायाकल्प, गोदान, मंगलसूत्र और संग्राम अदि उनके उपन्यास हैं। मानसरोवर के आठ भागों में उनकी लगभग 300 कहानियाँ संग्रहित हैं। प्रेम की वेदी, कर्बला और संग्राम उनके नाटक हैं। कुछ विचार, कलम और तलवार, और त्याग अदि इनके निबंध संकलन हैं।

‘बूढ़ी काकी’ में प्रेमचन्द ने ऐसे दयनीय वृद्धों की अवस्था की ओर हमारा ध्यान खींचा है, जिन्हें उपेक्षा मिलती है और जो जीवन के हर क्षण का आनंदपूर्वक उपभोग करना चाहते हैं। तो आइए हम ये कहानी का अभ्यास करते हैं और इससे मिलने वाली जीवन उपयोगी सिख लेते हैं।

स्वाध्याय

१. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

१. बूढ़ी काकी के भतीजे का क्या नाम था ?

(अ) धनीराम

(ब) प. बुद्धिराम

(क) सुखराम

(ड) दुःखराम

२. रूपा किसकी पत्नी थी ?

(अ) धनीराम

(ब) मनीराम

(क) हनीराम

(ड) प. बुद्धिराम

३. किसने अपने हिस्से की पूड़िया काकी के लिए बचाकर रखी थी ?

(अ) रूपा

(ब) बुद्धिराम

(क) लाड़ली

(ड) श्यामा

४. बूढ़ी काकी को पत्तलो पर से जूठी पूड़ि के टुकड़े खाता देखकर कोन सन्न गया ?

(अ) रूपा

(ब) बुद्धिराम

(क) लाड़ली

(ड) श्यामा

२. निम्नलिखित प्रश्नों के एक – एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

१. बूढ़ी काकी कैसे रोती थी ?

उत्तर: बूढ़ी काकी गला फाड़ – फाड़ कर रोती थी ।

२. बुद्धिराम के घर किस उत्सव में पूड़िया बन रही थी ?

उत्तर : बुद्धिराम के घर उसके बड़े बेटे सुखराम के तिलक के उत्सव में पूड़िया बन रही थी ।

३. बूढ़ी काकी को कहा पर बैठा देखकर रूपा क्रोधित हो गई ?

उत्तर : बूढ़ी काकी को भोजन के कड़ाह के पास बैठा देखकर रूपा क्रोधित हो गई ।

४. किस खुशी में लाड़ली को नींद नहीं आ रही थी ?

उत्तर: काकी को पूड़िया खिलाने की खुशी में लाड़ली को नींद नहीं आ रही थी ।

५. उत्सव के दिन बूढ़ी काकी किसके डर से नहीं रो रही थी ?

उत्तर: उत्सव के दिन अपशकुन के डर से काकी नहीं रो रही थी ।

६. बुढ़ापे में बूढ़ी काकी समस्त ईच्छाओं का केन्द्र कोन सी इन्द्रिय थी ?

उत्तर : बुढ़ापे में बूढ़ी काकी की समस्त ईच्छाओं का केन्द्र स्वादेन्द्रिय थी ।

३ निम्नलिखित प्रश्नों के दो - तीन वाक्य में उत्तर लिखिए :

१. बूढ़ी काकी कब रोती थी ?

उत्तर : बूढ़ी काकी जब घरवाले उनकी ईच्छा के प्रतिकूल कोई बात करते, भोजन का समय टल जाता या उसकी मात्रा कम होती, अथवा बाजार से कोई वस्तु आती ओर उसे न मिलती तब वे रोने लगती ।

२. लड़के बूढ़ी काकी को कैसे सताते थे ?

उत्तर : लड़के अक्सर काकी को सताने के लिए उन्हें चुटकी काटकर भाग जाते थे, या कोई उन पर पानी कुल्ली कर देते थे । इस तरह जब मोका मिलता तब बच्चे काकी को सताया करते थे ।

३. बूढ़ी काकी की कल्पना में पूड़िया की कैसी तसवीर नाच ने लगी ?

उत्तर : बूढ़ी काकी की कल्पना में खूब लाल – लाल , फुली -फुली ओर नरम – नरम पूड़ियों की तसवीर नाच ने लगी ।

४. थाली में भोजन सजाकर बूढ़ी काकी को खिलाते समय रूपा ने क्या कहा ?

उत्तर : काकी को भोजन कराने के लिए रूपा थाली में भोजन सजाकर आई और काकी को कंठावरुद्ध स्वर में कहा “काकी उठो, भोजन कर लो । मुजसे आज बड़ी भूल हुई, उसका बुरा न मानना । परमात्मा से प्रार्थना कर दो कि वे मेरा अपराध क्षमा कर दें ।

५. बुद्धिराम ने बूढ़ी काकी की संपत्ति कैसे हथिया ली थी ?

उत्तर : बूढ़ी काकी के पति और बच्चे चल बसे थे । अब उसके परिवार में भतीजा बुद्धिराम ही था। बुद्धिराम ने सारी संपत्ति अपने नाम लिखाते समय खूब लंबे चौड़े वादे किए और जूठे सपने दिखाए गए । इस तरह बुद्धिराम ने काकी की संपत्ति हथिया ली थी ।

४ निम्नलिखित प्रश्नों के चार - पाँच वाक्य में उत्तर लिखिए :

१. क्या देखकर रूपा को पश्चयाताप हुआ ? क्यों ?

उत्तर : रूपा के घर में अपने बड़े बेटे के तिलक के अवसर पर उनेक व्यजन बने हुए थे । महेमानों के खाने के बाद भी काकी को भोजन के लिए किसीने नहीं पूछा । इसलिए भूखी बूढ़ी काकी महेमानों की झूठी पत्तलो में से पूड़िया, कचोडिया के टुकड़े खा रही थी । यही द्रश्य देखकर रूपा को पश्चयाताप हुआ । रूपा को इस बात का पछतावा है कि काकी की संपत्ति से रूपा को वार्षिक दो सौ रुपया आय हो रही थी, फिर भी काकी की ऐसी दशा खुद रूपा के कारण थी ।

२. रूपा और बुद्धिराम ने बूढ़ी काकी के प्रति कब अरमायु व्यवहार किया और क्यों ?

उत्तर : रूपा के बेटे के तिलक के कारण उसके घर में मसालेदार व्यजन बन रहे थे । और व्यजन की खुशबू काकी को बेचैन कर रही थी । इसलिए वह रेंगती हुई कड़ाह के पास आ बैठी । उसे वहाँ देख कर रूपा काकी पर क्रोधित हुई, उसने काकी को दोनों हाथों से जटककर बहुत जलील किया । इसके बाद बूढ़ी काकी फिर से भोजन की आश में महेमान खा रहे थे वहाँ आ पहुँची । बुद्धिराम काकी को देखते ही क्रोध से तिलमिल गए । उन्होंने ने काकी के दोनों हाथ पकड़े और घसीटते हुए लाकर कोठरी में धम से पटक दिया । इस तरह रूपा और बुद्धिराम ने बूढ़ी काकी के प्रति कब अरमायु व्यवहार किया ।

३. खाने के बारे में बूढ़ी काकी के मन में कैसे – कैसे मंसूबे बंधे ?

उत्तर : बूढ़ी काकी की कल्पना में खूब लाल – लाल फूली – फूली, नरम – नरम पूड़ियों की तसवीर नाचने लगी । वो सोचती है कचोड़ियों में अजवाइन और ईलायची की महक आ रही होगी । वे मन में ही कहने लगी कि पहले सब्जी से पूड़ियाँ खाऊँगी, फिर दही और शककर से कचोड़ियाँ रायते के साथ मजेदार लगेगी । चाहे कोई कुछ भी कहे वह परवाह नहीं करेगी । इतने दिन बाद पूड़ियाँ मिल रही हैं तो मुह झूठा करके थोड़े ही उठ जाऊँगी । इस प्रकार बूढ़ी काकी ने मन में तरह – तरह के मंसूबे बाँधे ।

४. बुढ़ापा तृष्णारोग का अंतिम समय है लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ?

उत्तर : तृष्णा यानि की ईच्छा - कामना । वृद्धावस्था में मनुष्य के जीवन के गिने हुए वर्ष ही बचे रहते हैं । और यही बचे हुए कुछ साल में वह अपनी ईच्छाओं को पूरी करने की कोशिश करता है । उसके लिए अच्छा – बुरा मान – अपमान कुछ भी माँड़ने नहीं रखता । इसलिए लेखक ने कहा है कि बुढ़ापा तृष्णारोग का अंतिम समय है ।

५ आशय स्पष्ट कीजिए :

१. बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है ?

उत्तर : वृद्धावस्था में मनुष्य बच्चे जैसा हो जाता है । एक तरह से कहे तो बुढ़ापा बचपन का ही एक रूप है । बुढ़ापे में अक्सर लोग शरीर से कमजोर हो जाते हैं । इसलिए बच्चों की तरह उसे दूसरों का सहारा लेना पड़ता है । दांत गिर जाते हैं । ज्यादातर बच्चे बातें करते हैं तो उस पर कोई ध्यान नहीं देता वैसे ही बूढ़ों की बातों पर भी कोई ध्यान नहीं देता । छोटी – छोटी ऐसी बहुत सी बातें होती हैं जो की

बच्चो और बूढ़े मे समान होती है । ईसलिए कहते है कि बुढापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है ।

२. लड़को का बूढो से स्वाभाविक विद्वेष होता ही है ?

उत्तर : बूढो और बच्चो की उम्र मे पिढियो का अन्तर होता है । ईसलिए दोनों की सोच मे भी फर्क रहता है । बूढे हर बात को अपने तरीके से सोचते है और नई पेढी के लड़के नये ढंग से सोचते है, काम करते है । ईसलिए दोनों की विचारधारा मे टकराव होना स्वाभाविक है । ईसप्रकार लड़को का बूढो से स्वाभाविक विद्वेष होता ही है ।

६ सूचनानुसार उत्तर लिखए :

१. समानाथी शब्द दीजिए :

दीनता - दरिद्रता

वाटिका - उधान

२. विरुद्धाथी शब्द दीजिए :

प्रतिकूल - अनुकूल

सज्जन - दुर्जन

अनुराग - विराग

सुलभ - दुर्लभ

अपशकुन - शकुन

दीर्घाहार - अल्पाहार

निर्लज्जता - लज्जा

अपरिमित - परिमित

३. शब्दसमूह के लिए एक शब्द दीजिए :

१) जहा घटना बनी है वह जगह - घटनास्थल

२) जीभ का स्वाद - रसास्वाद

३) भूख से आतुर - क्षुधातुर

४) धीरज की परिक्षा लेनेवाली - धैर्य परीक्षक

४. मुहावरों के अर्थ बताकर वाक्य – प्रयोग कीजिए :

१. सब्जबाग दिखाना – झठी आशाए देना ।

वाक्य: बुद्धिराम ने सब्जबाग दिखाकर बूढ़ी काफी की सारी संपत्ति अपने नाम कर दी थी ।

२. आपे से बाहर होना – सामर्थ्य से अधिक क्रोध करना ।

वाक्य : अपने साथी की पिटाई का समाचार सुनते ही छात्र आपे से बाहर हो गए ।

३. उबल पड़ना – क्रोधित होना ।

वाक्य : परीक्षा में छात्र को चोरी करता देख अध्यापक उस पर उबल पड़े ।

४. छाती पर सवार होना – सामने अडे रहना ।

वाक्य : आज – कल के बच्चे अपनी बात मनवाने के लिए छाती पर सवार रहते हैं ।

५. नाक कटवाना – बदनामी करवाना ।

वाक्य : महेश की शराब पीने की बुरी लत ने गांव में उसके पिता की नाक कटवा दी ।

६. बेसिर पैर की बात – व्यर्थ की बात करना ।

वाक्य : राजन की बात बेसिर पैर की होती है । ऐसी बातें करके वह अपना टाइम पास करता है ।

७. हृदय सन्न रह जाना – आश्चर्य चकित हो जाना ।

वाक्य : बूढ़ी काफी झूठे पत्तलो में से पूड़िया के टुकड़े उठाकर खा रही थी यह देखकर रूपा का हृदय सन्न रह गया ।

८. मुह बाएँ फिरना – बेकार की हालत में घूमना ।

वाक्य : रमा का पति कुछ काम – धंधा नहीं करता है, मुह बाएँ फिरता है ।

९. कलेजे में हुफ सी उठना – मन में वेदना उत्पन्न होना ।

वाक्य : फुटपाथ पर बेसहारा लोगों की हालत देखकर मेरे कलेजे में हुफ उठने लगे ।

१०. रोटियों के लाले पड़ना – खाना पाने के लिए तरसना ।

वाक्य : नौकरी जाने के कारण वरुण के परिवार में रोटियों के लाले पड़ने लगे ।

११. आग हो जाना – अत्यंत क्रोधित होना ।

वाक्य : महेशमान भोजन कर रहे थे, वहाँ काफी को बैठा देख बुद्धिराम आग हो गया ।

१२. जवाब दे चुकना – निष्क्रिय होना ।

वाक्य : बूढ़ी काफी की समस्त इंद्रिया, हाथ और पैर जवाब दे चुके थे ।

१३. कलेजा पसीजना – दया आना ।

वाक्य : बूढ़ी काफी को झूठा खाते देख रूपा का कलेजा पसीज गया ।

५. संधि – विच्छेद कीजिए :

- १) परमानंद = परम + आनंद
- २) परमात्मा = परम + आत्मा
- ३) अर्धांगिनी = अर्ध + अंगिनी
- ४) स्वार्थानुकूलता = स्वार्थ + अनुकूलता
- ५) सहानुभूति = सह + अनुभूति
- ६) रसास्वादन = रस + आस्वादन
- ७) व्याकुल = वि + आकुल
- ८) दीर्घाहार = दिर्घ + आहार
- ९) प्रतीक्षा = प्रति + ईक्षा
- १०) कण्ठावरुद्ध = कंठ + अवरुद्ध
- ११) क्षुधातुर = क्षुधा + आतुर
- १२) कालान्तर = काल + अन्तर
- १३) रक्षागार = रक्षा + अगार
- १४) सज्जन = सत + जन
- १५) सदिच्छाए = सत + ईच्छाए
- १६) पुनरागमन = पुनः + आगमन
- १७) दुर्गती = दुः + गति
- १८) सम्मुख = सम + मुख

६. विग्रह करके समास का नाम लिखिए :

समास	विग्रह	प्रकार
१) क्षुधातुर	क्षुधा रूपी तरु	कर्मधारय समास
२) सदिच्छाए	सत ईच्छाए	कर्मधारय समास
३) क्षुधावर्धक	क्षुधा मे वृद्धि करनेवाला	उपपद समास
४) रसास्वादन	रस का आस्वादन	संबंधक तत्पुरुष समास

